© 2017 IJSRST | Volume 3 | Issue 6 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X
Themed Section: Science and Technology

नास्तिक दर्शन–एक परिचय

शैलेश कुमार द्विवेदी
शोधच्छात्र
संस्कृत विभाग,
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

भारतीय दर्शन के दो प्राचीन सम्प्रदाय हैं–आस्तिक एवं नास्तिक। 'नास्ति' शब्द से ठक् प्रत्यय होकर नास्तिक शब्द निष्पन्न होता है[1] जिसका शाब्दिक अर्थ है 'नहीं है'। प्रश्न उठता है कि कौन नहीं है? तब सिद्धान्तकौमुदीकार कहते हैं कि 'परलोक या ईश्वर नहीं है' इस प्रकार की मति है जिसकी वह नास्तिक है।[2] ठीक इसी प्रकार नास्तिक का विपरीतार्थक आस्तिक शब्द भी निष्पन्न होता है। अतः परलोक या ईश्वर है इस प्रकार की मति है जिसकी वह आस्तिक है।[3] इस प्रकार आस्तिक और नास्तिक शब्दों के व्युत्पत्तिलभ्य अर्थ के अनुसार परलोक या ईश्वर में, विश्वास करने वाले आस्तिक तथा विश्वास न करने वाले नास्तिक हैं।

किन्तु आस्तिक और नास्तिक शब्दों का उपरोक्त अर्थ भारतीय दार्शनिक परम्परा के सन्दर्भ में समीचीन प्रतीत नहीं होता, क्योकि सभी भारतीय दर्शन में केवल चावार्क दर्शन ही ऐसा है जिसे उक्त अर्थ में नास्तिक कहा जा सकता है। मनुस्मृति के अनुसार 'वेद की निन्दा करने वाला नास्तिक है'।[4] तात्पर्य यह है कि जो वेद की प्रामाणिकता को स्वीकार करते हैं वे आस्तिक हैं तथा जो वेद की प्रामाणिकता को स्वीकार नहीं करते वे नास्तिक हैं।

वास्तव में नास्तिक दर्शन वेद विरुद्ध थे और वैदिक कर्मकाण्ड, जटिलताओं, बाह्याचारों के विरोधस्वरूप इन दर्शनों का उद्भव हुआ। चार्वाक दर्शन में तो खुलेआम वेदों की निन्दा की गई है। जैन और बौद्ध दर्शन भी तीर्थंकरों और स्थविरों में विश्वास रखते हैं तथा वेदों को महत्त्व नहीं देते। भारतीय दर्शनों का वर्गीकरण यदि परलोक में विश्वास के आधार पर किया जाय तो जैन तथा बौद्ध भी आस्तिक

दर्शन कहे जायेंगे।[5] किन्तु ऐसा नहीं है। चार्वाक जैन और बौद्ध दर्शन नास्तिक हैं तथा षड्दर्शन (न्याय–वैशेषिक, सांख्य–योग, मीमांसा–वेदान्त) आस्तिक दर्शन हैं।

इनमें नास्तिक दर्शनों का एकैकशः परिचय निम्न है–

चार्वाक दर्शन–

चार्वाक दर्शन का प्रवर्तक वृहस्पति को माना जाता है। चार्वाक दर्शन को लोकायत भी कहा जाता है। लोकायत का अर्थ है लोगों में प्रचलित था तथा सामान्य लोकमत का प्रतिपादन भी करता है।[6] 'सर्वदर्शनसंग्रह' नामक ग्रन्थ में चार्वाक के सैद्धान्तिक पक्ष का निरूपण करते हुए कहा गया है कि 'न कोई मोक्ष है न ही परलोक है, न कोई आत्मा है, न चारो वर्णों के कर्म व्यवस्था आदि का कोई यथार्थ फल होता है'।[7] चार्वाक जीवन के ध्येय या परमलक्ष्य के विषय में भी अपनी भौतिक मान्यता रखता है।

चार्वाक के अनुसार ''जब तक जीवित रहो सुखपूर्वक रहो, क्योंकि कोई भी मनुष्य मृत्यु के अगोचर नहीं है तथा मरने के बाद शरीर भस्म हो जाता है तथा पुनः संसार में आना नहीं होता।''[8] अर्थात् चार्वाक ईश्वर के साथ–साथ आत्मा और पुनर्जन्म को भी अस्वीकार करते हैं। इनके अनुसार पृथ्वी, जल, वायु और अग्नि इन चार भूतों के परिणाम से चेतनायुक्त यह शरीर निर्मित हुआ है और यही आत्मा है।[9] इसके अतिरिक्त वह केवल प्रत्यक्ष प्रमाण को स्वीकार करता है। चार्वाक दर्शन के अनुसार उपरोक्त चारों भूतों के भौतिक तत्त्वों के संयोग से ही विश्व का निर्माण हुआ है। निर्माण का अर्थ भूतों का संयुक्त होना है। प्रलयकाल में ये संयुक्त भूत बिखर जाते हैं। इस प्रकार चार्वाक जड़वाद का समर्थन करता है। चार्वाक के नामकरण के सम्बन्ध में तीन मत है– (1) चार्वाक ऋषि के नाम के आधार पर (2) चर्व धातु से निष्पन्न होने के कारण चार्वाक नाम पड़ा जिसका अभिप्राय है खाने पीने पर अधिक बल देने वाला दर्शन (3) चारू वाक् अर्थात् सुन्दर, प्रिय लगने वाली बातें कहने वाला दर्शन 'चार्वाक' है।[10]

जैन दर्शन

जैन धर्म के 24वें व अन्तिम तीर्थंकर भगवान् महावीर ने जिस जीवन दर्शन को प्रस्तुत किया उसे जैनदर्शन कहा गया। जैन दर्शन को वैदिक और बौद्ध दर्शन के बीच का दर्शन कहा जा सकता है। वैदिक

दर्शन कहता है कि ब्रह्म ही सत्य है, बौद्ध दर्शन कहता है कि सब कुछ अनित्य है, जबकि जैनदर्शन दोनों का समर्थन करते हुए कहता है कि कुछ नित्य है और कुछ अनित्य। चेतन द्रव्य ही आत्मा या जीव है। जीव का लक्षण है चेतनता।[11] चेतना सम्पूर्ण शरीर में व्याप्त है। जीव की दो कोटियाँ बतलाई गई हैं– मुक्तजीव और बद्धजीव। जब जीव कषायों के कारण कर्म–पुद्गलों को ग्रहण कर लेता है तो पुद्गल जीव को जकड़ लेते हैं यही बद्धजीव है।[12] किन्तु जब त्याग तपस्या से कर्म का आवरण हटाकर जीव की कैवल्य पद की प्राप्ति हो जाती है तो इसे ही मोक्ष कहते हैं।[13] और इस प्रकार के जीव को मुक्तजीव कहा जाता है। इसी मुक्तजीव को ईश्वर की संज्ञा दी जाती है।[14] जब ज्ञान, श्रद्धा, चरित्र एवं भावना रूपी साधनों द्वारा कर्मों का क्षय हो जाता है तो इसे ही मोक्ष कहते हैं।[15] जैन दर्शन में सम्यक् दर्शन, सम्यक ज्ञान और सम्यक् चरित्र त्रिरत्न हैं। इनके अतिरिक्त सत्य, अहिंसा, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह ये पंचमहाव्रत हैं। जैनदर्शन ईश्वर के अस्तित्व को अस्वीकार करता है। इनके अनुसार सृष्टि अनादि है और इसके प्राकृतिक नियम अटल हैं। ये प्रत्यक्ष तथा अनुमान दो प्रमाणों को स्वीकार करते हैं।

जैन दर्शन के दो प्रमुख सिद्धान्त हैं अहिंसा और अनेकान्तवाद। अनेकान्तवाद को स्याद्वाद भी कहते हैं। 'सप्तभंगीनय' से एक ही वस्तु को अनेक रूपों में देखा जा सकता है। इस दर्शन से आपसी समझदारी, समता, सहिष्णुता, समन्वय और सह–अस्तित्व के सिद्धान्त को बल मिलता है। 'जियो और जीने दो' इस दर्शन का मूलमंत्र है। कालान्तर में जैन सम्प्रदाय दो उप सम्प्रदायों में विभक्त हो गया। ये थे– श्वेताम्बर एवं दिगम्बर। दिगम्बर आचार पालन में कठोर हैं तथा श्वेताम्बर कुछ उदार हैं।[16]

बौद्धदर्शन–

बौद्धदर्शन के प्रणेता महात्मा बुद्ध हैं। बुद्ध के उपदेश 'सर्वजन हिताय' हैं। भगवान् बुद्ध अपने दर्शन की शुरूआत करते हुए ही कहते हैं कि 'संसार में दुःख ही दुःख है।[17] भगवान् बुद्ध चार आर्यसत्यों का उपदेश अपने अनुभव के आधार पर देते हैं। ये है– दुःख, दुःख समुदय, दुःख निरोध और दुःख–निरोध –मार्ग।[18] संसार के सभी पदार्थ अनित्य और नश्वर होने के कारण दुःखरूप हैं। संक्षेप में जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त सारा जीवन ही दुःख है। और मृत्यु भी दुःख का अन्त नहीं है क्योंकि मृत्यु के बाद पुनर्जन्म

होता है और जन्म के बाद पुनः मृत्यु होती है। इसी काल चक्र में फंसकर व्यक्ति दुःख भोगता रहता है। दुःख समुदय का अर्थ है दुःख उत्पन्न होता है। इसका उदय होता है। यही प्रतीत्यसमुत्पाद का सिद्धान्त है। दुःख समाप्त किया जा सकता है और दुःख निरोध मार्ग अष्टांगिक मार्ग हैं। ये हैं– सम्यक् दृष्टि, सम्यक् संकल्प, सम्यक् वाक्, सम्यक् कर्मान्त, सम्यक् आजीव, सम्यक् व्यायाम, सम्यक् स्मृति और सम्यक् समाधि। इन अष्टांगिक मार्गों पर चलते हुए मोक्ष की प्राप्ति की जा सकती है। इसके अतिरिक्त बौद्धदर्शन अनीश्वरवादी और अनात्मवादी है। इनके अनुसार द्रव्य सत् है किन्तु क्षणिक है। बौद्ध सिद्धान्त में किसी मूल कारण की व्यवस्था नहीं है, वे किसी एक कारण से सम्पूर्ण जगत् की उत्पत्ति को नहीं मानते।[19] बौद्धधर्म के अनुसर कोई ग्रन्थ प्रामाणिक नहीं हो सकता क्योंकि किसी ग्रन्थ को स्वतः प्रमाण मानने से बुद्धि और अनुभव की प्रामाणिकता समाप्त हो जाती है। इस प्रकार वे वेदों की प्रामाणिकता का निषेध करते हैं। बौद्ध दर्शन प्रत्यक्ष और अनुमान दो प्रमाणों को स्वीकार करता है। उपरोक्त अष्टांगिक साधनों से मनुष्य की अविद्या और तृष्णा नष्ट हो जाती है। दुःख का पूर्ण विनाश हो जाने पर पुर्नजन्म की सम्भावना भी समाप्त हो जाती है। ऐसी अवस्था को बौद्धदर्शन में 'निर्वाण' नाम दिया गया है।[20] कालान्तर में यह चार उपसम्प्रदायों वैभाषिक, सैद्धान्तिक, विज्ञानवाद (योगाचार) तथा शून्यवाद (माध्यमिक), में विभक्त हुआ तथा हीनयान और महायान नामक, दो शाखाएँ भी प्रचलित हुईं। हीनयान में भिक्षुजीवन अर्थात् सन्यास को श्रेयसकर माना गया है और महायान में अनाक्त रहकर संघर्ष करना श्रेष्ठ माना गया है। अतः हीनयान का पालन दुर्गम तथा महायान अपेक्षाकृत सुगम मार्ग था।

वास्तव में नास्तिक सम्प्रदायों का विकास वैदिक सम्प्रदायों की प्रतिक्रिया स्वरूप हुआ। नास्तिक विचारधारा तत्कालीन समाज में व्याप्त कुरीतियों पर एक ऐसा आघात था जिसने परवर्ती समाज को एक नवीन दिग्दर्शन दिया। जिस समय बौद्ध धर्म का उपदेश भगवान् बुद्ध ने दिया, वह समय कर्मकाण्ड का चमर काल था तथा यज्ञों में विभिन्न प्रकार की पशु बलि आदि हिंसायें स्वीकृत थीं। किन्तु जैन एवं बौद्धदर्शनों द्वारा अहिंसा को प्राथमिकता प्रदान की गई। इस प्रकार ये नास्तिक सम्प्रदाय भी भारतीय दर्शन

में अपने–अपने विशेष सिद्धान्तों के कारण प्रासंगिक एवं प्रतिष्ठित हैं। इनके बिना भारतीय दर्शन अधूरा है। इसी से इनका महत्त्व सिद्ध है।

सन्दर्भ सूची

1. अस्ति नास्ति दिष्टं मतिः– अष्टाध्यायी 4/4/60
2. नास्ति परलोकः इत्येवं मतिर्यस्य स नास्तिकः– सिद्धान्तकौमुदी
3. अस्ति परलोकः इत्येवं मतिर्यस्य स आस्तिकः– सिद्धान्तकौमुदी
4. नास्तिको वेद निन्दकः – मनुस्मृति 2.11
5. भारतीय दर्शन, चटर्जी एवं दत्ता, पृ0 6
6. डा0 देवराज एवं डा0 तिवारी, दर्शनशास्त्र का परिचय पृ0 99
7. ना स्वर्गो नापवर्गो व नैवात्म पारलौकिक।
   तव वर्णाश्रमादीना क्रियाश्च फल दायिका।।–सर्वदर्शनसंग्रह 1–4
8. यावज्जीवं सुखं जीवेन्नास्ति मृत्योरगोचरः।
   तस्मीभूतस्य देहस्य पुनरागमनं कुतः।।–सर्वदर्शनसंग्रह, चार्वाकदर्शन पृ01
9. तच्चैतन्यविशिष्टदेह एव आत्मा।
10. भारतीय दर्शन की रूपरेखा, प्रो0 हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पृ0 79
11. चैतन्यलक्षणो जीवः।
12. सकषायत्वात् जीवः कर्मणो योग्यान् पुद्गलान् आदत्ते, स बन्धः–तत्वार्थसूत्र 8, 2–3
13. राहुल सांकृत्यायन, दर्शन–दिग्दर्शन, पृ0 599।
14. डा0 देवराज एवं डा0 तिवारी, दर्शनशास्त्र का इतिहास, पृ0 127
15. कृत्स्नकर्मक्षयो मोक्षः – तत्वार्थसूत्र 10, 3
16. भारतीय दर्शन–आलोचन और अनुशीलन, चन्द्रधर शर्मा, पृ0 26–28
17. सर्वं दुखम्, सर्वस्य संसारस्य दुखात्मकं.....सर्वदर्शनसंग्रह, बौद्धदर्शन
18. भारतीय दर्शन– आलोचन और अनुशीलन, चन्द्रधर शर्मा, पृ0 48
19. 'बौद्ध–धर्म–दर्शन', नरेन्द्र देव।
20. भारतीय दर्शन, चटर्जी एवं दत्त, पृ0सं0 25